भगत रविदास – सबद १२
माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
रागु आसा, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८७

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥
कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
बाजीगर सउ मुहि प्रीति बनि आई ॥३॥६॥

सार: मिट्टी से बनी कठपुतली, हमें अपने शरीर की याद दिलाती हैं जो कुछ समय के लिए मज़बूत हैं लेकिन अंत में कमज़ोर पड़ जाते हैं। इस कमज़ोरी के बावजूद, हम ऐसी पहचान बनाते हैं मानो वह सदा रहेगी। हम अपने क्षणभंगुर जीवन की सच्चाई को अनदेखा करते हैं और प्रतिष्ठा, सत्ता और नियंत्रण में अपनी ऊर्जा लगा देते हैं। जैसे एक कठपुतली अपने धागों के खिंचने के हिसाब से चलती है वैसे ही मनुष्य समाज के नियमों और धार्मिक संस्थाओं से प्रभावित, आदतों, इच्छाओं, भय और संस्कारों के अनुसार प्रतिक्रिया करता है। हम गलती से इन प्रतिक्रियाओं को ही स्वतंत्रता मान लेते हैं और मजबूर होने और सच में जागरूक होने के बीच के अंतर को नहीं पहचान पाते। जब हम विवश करने वाली बाध्य प्रतिक्रियाओं से हटकर सजग उत्तरदायित्व की ओर बढ़ते हैं तभी जागरूकता उत्पन्न होती है जो सच में हमारे अस्तित्व के उद्देश्य को स्पष्ट करती है।

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखो ध्यान से, यह मिट्टी की कठपुतली कैसे नाचती है। यह हमारे उन कर्मों पर सोचने के लिए प्रेरित करता है जो कि प्रशिक्षित संस्कारों द्वारा संचालित होते हैं जबकि हम शरीर की नश्वरता को भूल जाते हैं।

देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥
यह इधर-उधर देखता है, ध्यान से सुनता है, अक्सर बोलता है और निरंतर दौड़ता और चलता रहता है। यह हमारी इंद्रियों का वर्णन है जब हमारे अंदर शांति नहीं होती जिससे मन और शरीर बेचैन रहते हैं और क्षणिक भ्रमों के पीछे निरंतर भागते रहते हैं। (१)(विराम)

जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
जब इसे कोई भौतिक वस्तु मिल जाती है तब यह अभिमान करने लगता है। यह बाहरी चीज़ों से पहचान बनाने की अहंकार की प्रवृत्ति को दिखाता है जिससे श्रेष्ठता का झूठा एहसास होता है और जीवन की नश्वरता को भूल जाते हैं।

माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥
जैसे-जैसे भ्रम फीके पड़ते हैं तब यह निराशा से रोने लगता है। यह मन के उस कष्ट को दिखाता है जो तब पैदा होता है जब उसकी स्थिरता क्षणिक लाभ और उपलब्धियों पर निर्भर करती है। (१)

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
इसके विचार, वाणी और कर्म अलग-अलग सुखों की ओर आकर्षित रहते हैं। यह हमारी इंद्रियों के प्रभाव पर ज़ोर देता है जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के परिणाम हो सकते हैं।

बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥
जब यह नष्ट होता है तब यह कहाँ जाता है और किसमें मिल जाता है? यह प्रश्न जीवन की नश्वरता और उन अनजानी आसक्तियों के अस्तित्व की ओर संकेत करता है जो हमें बाँधे रखती हैं। (२)

कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
रविदास कहते हैं कि दुनिया एक मंचित नाटक की तरह चलती है जो मनमोहक है। यह हमें अपने आस-पास की चीज़ों को संजोने और अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है बजाय इसके कि हम स्थायित्व के भ्रम से जुड़े रहें।

बाजीगर सउ मुहि प्रीति बनि आई ॥३॥६॥
कठपुतली वाले से, मैंने एक प्रेमपूर्ण संबंध बनाया है। यह भ्रमपूर्ण जुड़ावों से हटकर मूल-स्रोत से जुड़ने का संकेत देता है, वह सार्वभौमिक चेतना जो सांसारिक खेल को संचालित करती है। (३)(६)

तत्त्व: भक्त रविदास जीवन के बारे में ऐसा नज़रिया देते हैं जो इसे किसी वस्तु की तरह पाने के बजाय इसकी क्षणभंगुर प्रकृति पर ज़ोर देता है। जीवन की अस्थिरता को पहचानकर, हम देखते हैं कि हमारे जुड़ाव अनुभव से दूर रहने से नहीं बल्कि उनके क्षणिक स्वभाव को स्वीकार करने से कम होने लगते हैं। यह परिवर्तनकारी समझ हमें उद्देश्य और शांति के साथ काम करने की शक्ति देती है जिससे हमारे काम सहज रूप से होते हैं और शालीनता से समाप्त हो जाते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com